नवभारत टाइम्स, 17.10.1989 (दिल्ली)

सी. आई. ए. और के. जी. बी. में तालमेल ?

–शशिधर खां

सोवियत संघ और अमेरिका की आपसी प्रतिद्वंद्विता विश्वजनीन है। लगभग सारा संसार दो खेमों में बंटा है और ये दोनों देश अपने-अपने खेमे के अगुआ हैं। अमेरिका और सोवियत संघ में एक-दूसरे के खेमे के अंदरूनी मामलों की टोह लेने की होड़ लगी रहती है और इसीलिए दोनों देशों की खुफिया एजेंसियों ने चारों तरफ अपने एजेंटों का जाल बिछा रखा है जिसमें किसी देश का तख्ता पलटने से लेकर महत्वपूर्ण व्यक्तियों की हत्या करवाने तथा उन्हें गायब करवाने तक के काम भी शामिल हैं।

इस बीच सोवियत खुफिया एजेंसी के.जी.बी. और अमेरिकी खुफिया एजेंसी सी.आई.ए. में तालमेल की बात सुनने में आई, यह बात अविश्वसनीय जरूर है (क्योंकि दुनिया को दिखाने के लिए अमेरिकी और सोवियत संघ में हथियारों की होड़ और तनाव कम करने की बात चलती रहती है तथा अंदर-अंदर खुफिया एजेंसियां एक-दूसरे की गोपनीय बातें जानने की जुगाड़ में रहती हैं) लेकिन हाल के कुछ तथ्यों से सही मालूम पड़ती है कि इसमें के.जी.बी. की ओर से पहल की गई है

इस हफ्ते के.जी.बी. और सी.आई.ए. के अवकाश प्राप्त जासूसों ने किसी अज्ञात स्थान पर अपनी टोली की बैठक बुलाई और यह फैसला किया कि वे आपस में सूचनाओं का आदान-प्रदान करने को तैयार हैं। यह शुरुआत आतंकवाद से सम्बन्धित जानकारियों के लेन-देन से होगी, भले ही उन आतंकवादियों की वापसी से जो कभी के.जी.बी. के लिए काम करते थे, बदले में सी.आई.ए. को भी वे आतंकवादी लौटा दिए जाएंगे जो कुछ दिन पहले तक अमेरिकी आतंकवाद के एजेंट थे।

रक्षा विषयक मामलों के विचार मंच रैंड कॉर्पोरेशन ने सोवियत और अमेरिकी खुफिया विशेषज्ञों की यह बैठक आयोजित की जिसमें सोवियत विशेषज्ञों ने कहा कि वे आतंकवादियों के हाथ प्लास्टिक बम और जमीन पर जमीन से मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र नहीं बेचने के पक्ष में हैं। उनके मुताबिक अब ये हथियार सिर्फ सरकारों को ही दिए जा सकेंगे। थोड़ी देर के लिए उस समय दोनों देशों के विशेषज्ञ गंभीर हो गए जब सोवियत विशेषज्ञों ने एक सुझाव दिया कि फिलहाल दोनों देश एक दूसरे को इस बात की जानकारी दें कि किस-किस देश में दोनों अपने-अपने काम के लिए आतंकवादियों को कितना हथियार दे रहे हैं। 'लॉज एंजिलिस टाइम्स' के अनुसार अंगोला और निकारागुआ की बात चली जहां दोनों देशों के आतंकवादी एक-दूसरे के खिलाफ ज्यादा सक्रिय हैं लेकिन इस पर विशेष चर्चा नहीं हुई। सी.आई.ए. के पूर्व उपनिदेशक रे क्लीन ने कहा कि आपस में तालमेल बिठाए रखना दोनों देशों के हित में है। उन्होंने संकेत दिया कि आतंकवाद ही नहीं, रक्षा सम्बन्धी जानकारी का भी सी.आई.ए. और के.जी.बी. के बीच आदान-प्रदान हो सकता है।

इस गुप्त बैठक में के.जी.बी. के पूर्व डिपुटी चेयरमैन फ्योदोर शर्बाक और आतंकवाद विरोधी अभियान के संचालक अवकाश प्राप्त मेजर जनरल वैलेन्ताइन वेडदेकोव के अलावा पूर्व सी.आई.ए. निदेशक विलियम कोरबी भी मौजूद थे। और रे क्लीन ने तो मुख्य भूमिका ही निभाई।

रैंड कॉर्पोरेशन के आतंकवाद विशेषज्ञ ब्रियां जेंकिन्स ने 'वाशिंगटन पोस्ट' को बताया कि सोवियत और अमेरिकी जासूसों का आमने-सामने होना और वो भी गुप्त सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए, अपने आप में बड़ा अटपटा लगता है क्योंकि पहली बार ऐसा हो रहा है,

पता नहीं क्या सोचकर बैठक की जगह का नाम जाहिर नहीं किया गया और शायद और भी कई बातें छुपाई गई हों लेकिन कुछ महत्वपूर्ण चर्चाओं में दोनों के दो अत्यन्त विश्वसनीय विशेषज्ञों में थोड़ी नोक-झोंक होने की बात सामने आई है।

वाशिंगटन स्थित 'सामान्य आधार की तलाश संगठन' के संचालक जॉन मार्क्स ने कहा कि सबसे ज्यादा जरूरी है विमान अपहरण और बंधक बनाने से सम्बन्धित सूचनाओं का आदान-प्रदान। इन घटनाओं में हाल में काफी बढ़ोतरी हुई है। इसके जवाब में सोवियत विज्ञान अकादेमी के पश्चिम एशियाई विशेषज्ञ आन्द्रे शूमीखिन ने तपाक से कहा कि इस काम में पश्चिम के आतंकवादियों को ज्यादा महारत हासिल है लेकिन हमें अपने देश को भी देखना है जहां पिछले दिनों विमान अपहरण की कई कोशिशें हुई हैं।

यह पूछे जाने पर कि लीबियाई और फलस्तीनी मामलों को लेकर जो रस्साकशी चल रही है वह कैसे खत्म होगी, रे क्लीन ने कहा कि वे बीती भूलकर बिल्कुल नए सिरे से सहयोग की बात करेंगे, क्योंकि यही सोचकर उन्होंने पिछले वर्ष की पान अमेरिकी विमान दुर्घटना की बात नहीं की जिसे सोवियत संघ के इशारे पर चेकोस्लोवाकिया के आतंकवादियों ने प्लास्टिक बम से उड़ा दिया था।